B. Nagi Reddi

Shri Bomi Reddi Nagi Reddi, an eminent publisher, successful film producer, philanthropist and a great lover of humanity, was born on 1st December, 1912 as the second child of Bommi Reddy Narasimha Reddy and Erukulamma, in the village Pottipadu, in the Kadapa district of Andhra Pradesh. Till the age of 12 his schooling was done at Kothapalli village. Later he studied at Muthiaplpet Higher Secondary School, Chennai. He was married to Seshamma on 4th December, 1933.

Initially, he took care of his father's onion export business, but his elder brother B. N. Reddy was instrumental in getting him involved in the film industry. Taking over from him the management of Vauhini Studios in 1948, he developed it as the largest studio in South East Asia, in less than 10 years. The Telugu film 'Shavukaru' was the first film produced by him under the banner of Vijaya Productions. The story for this first film of his was provided by Shri Chakrapani, who became his friend philosopher and guide in later years. This exemplary collaboration heralded the golden era in the world of Telugu, Tamil, Kannada and Hindi cinema.

Starting his career as a letter press printer in 1944, he chose to join hands with Shri Chakrapani and extended his activity into publishing a socio-political monthly, 'Andhra Jyothi' in Telugu in 1945. He later established one of India's largest offset printing presses, Prasad Process, which was then the only plant in India specialising in printing large size 24 sheet integrated hoarding posters. No wonder that Prasad Process was classified as an 'A' class printer in South India, winning the maximum number of awards from the Government of India for excellence in printing.

Conceptualised by B. Nagi Reddi and his friend Chakrapani, the monthly children's magazine 'Chandamama' was launched in the year 1947, the year our nation won independence, with the idea of making the children of India learn, think and dream together, despite their different mother tongues. Soon it became a household name. Besides English and Sinhalese, Chandamama was published in 14 Indian languages – Telugu, Tamil, Malayalam, Kannada, Sanskrit, Hindi, Marathi, Bengali, Odia, Assamese, Gujarati, Gurumukhi (Punjabi), Sindhi and Santhali (a tribal language). Chandamama also had a Braille edition in four languages for the visually impaired, distributed free.

As an emerging entrepreneur he held several high positions viz. President, All India Master Printers' Federation for three terms, President of South Indian Film Chamber of Commerce for three terms, President of Film Federation of India for two terms, Chairman of Tirumala Tirupati Devasthanams Board etc.

B. Nagi Reddi's dynamism could not be contained in all these achievements and the numerous accolades he received. His great aspiration was to provide quality medical service at affordable cost to the society. His vision led to the establishment of Vijaya Hospital in 1972 which was one of the first multispecialty hospitals in Chennai. With initial bed strength of 46, the hospitals have now grown to provide 700 beds under the banner of Vijaya Medical and Educational Trust. Vijaya Group of Hospitals is now one of the largest healthcare providers in South India and one of the most trusted Medical institutions.

Shri B. Nagi Reddi has won a number of awards including the most prestigious one, the Dada Saheb Phalke Award in 1986. He was also given Raghupathi Venkiah Award by the A.P. Government in the year 1987. He received the 'Kalaimamani' award by the Government of Tamilnadu in 1973, 'Johannes Gutenberg Fellow' from All India Master Printers' Federation in 1978 'TMA Pai Award' by Academy of General Education of Manipal. Besides, he received D.Lit (Honoris Causa) from Sri Venkateswara University in 1982 and Sri Krishnadevaraya University, in 1990. On 25th February, 2004 he left his mortal abode

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on B. Nagi Reddi.

Credits :

Text	:	Based on the material received from proponent
Stamp/ FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India

बी. नागी रेड्डी
B. NAGI REDDI
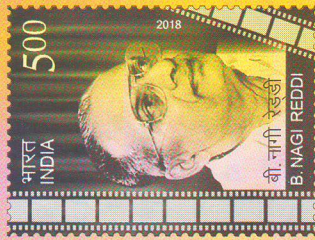
विवरणिका
BROCHURE

बी. नागी रेड्डी

प्रसिद्ध प्रकाशक, सफल फिल्म निर्माता, मानवता के पुजारी जैसे बहुमुखी व्यक्तित्व वाले श्री बोमी रेड्डी नागी रेड्डी का जन्म 1 दिसम्बर, 1912 को आन्ध्र प्रदेश के कडप्पा जिले के पुट्टिपाडु गांव में श्री बोम्मी रेड्डी नरसिंह रेड्डी और श्रीमती एरूकुलम्मा के द्वितीय पुत्र के रूप में हुआ। 12 वर्ष की उम्र तक उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा कोथापल्ली गांव में ग्रहण की। उसके बाद उन्होंने मुथियाप्लपेट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, चेन्नई में अपनी पढ़ाई की। 04 दिसम्बर, 1933 को सेशम्मा से उनका विवाह हुआ।

प्रारंभ में, वे अपने पिता के प्याज निर्यात का कारोबार संभालते थे। उनके बड़े भाई, श्री बी. एन. रेड्डी ने उन्हें फिल्म उद्योग में शामिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सन् 1948 में वोहिनी स्टुडियो की बागडोर संभालने के महज 10 साल के अंदर, उन्होंने उसे दक्षिण पूर्व एशिया के सबसे बड़े स्टुडियो के रूप में विकसित किया। तेलुगू फिल्म 'शावकारु' पहली फिल्म थी जिसे विजया प्रोडक्शन के बैनर के तहत निर्मित किया गया था। इस पहली फिल्म के कथाकार श्री चक्रपाणी थे जो आगे चलकर उनके मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक बने। इस अद्भुत जोड़ी ने तेलुगू, तमिल, कन्नड और हिंदी सिनेमा जगत के स्वर्ण युग का शुभारंभ किया।

वर्ष 1944 में लेटर प्रेस प्रिंटर के रूप में अपना करियर आरंभ करने वाले श्री नागी रेड्डी ने वर्ष 1945 में श्री चक्रपाणी के साथ मिलकर तेलुगू में सामाजिक–राजनीतिक मासिक पत्रिका 'आंध्र ज्योति' का प्रकाशन प्रारंभ किया। बाद में उन्होंने भारत की सबसे बड़ी ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस, प्रसाद प्रोसेस, की स्थापना की जो उस समय का एकमात्र ऐसा प्रेस था जिसमें एक साथ 24 पन्नों का एकीकृत होर्डिंग पोस्टर छापा जा सकता था। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि प्रसाद प्रोसेस को दक्षिण भारत का 'ए' क्लास प्रिंटर का दर्जा प्राप्त था। इसे प्रिंटिंग के क्षेत्र में भारत सरकार की ओर से अनेक पुरस्कार भी प्राप्त हुए।

भारत के बच्चों को अपनी विभिन्न मातृभाषाओं के बावजूद एक साथ सीखने, सोचने और सपने देखने के काबिल बनाने के उद्देश्य से, श्री बी. नागी रेड्डी और उनके मित्र श्री चक्रपाणी के संकल्पनात्मक कौशल से 1947, जब भारत स्वतंत्र हुआ– में बच्चों के लिए मासिक पत्रिका 'चन्दामामा' के प्रकाशन की शुरुआत की, जो जल्द ही घर-घर में प्रसिद्ध हुई। अंग्रेजी और सिंहली के अलावा, चन्दामामा 14 और भारतीय भाषाओं–तेलुगू, तमिल, मलयालम, कन्नड, संस्कृत, हिन्दी, मराठी, बंगाली, उड़िया, असमिया, गुजरांती, गुरमुखी (पंजाबी), सिंधी और संथाली (एक जनजातीय भाषा) में प्रकाशित होती थी। दृष्टिहीन बच्चों के लिए चन्दा मामा चार भाषाओं में ब्रेल लिपि में भी उपलब्ध थी और उसका वितरण मुफ्त में होता था ।

एक उभरते उद्यमी के रूप में उन्होंने कई उच्च पदों को अलंकृत किया अर्थात 3 बार अध्यक्ष, अखिल भारतीय मास्टर प्रिंटर्स फेडरेशन, 3 बार अध्यक्ष, साउथ इंडिया फिल्म चेम्बर ऑफ कॉमर्स, 2 बार अध्यक्ष, फिल्म फेडरेशन ऑफ इंडिया एवं अध्यक्ष, तिरुमला तिरुपति देवस्थानम बोर्ड आदि।

श्री बी. नागी रेड्डी की गतिशीलता मात्र उनकी इन उपलब्धियों और प्रशंसाओं तक ही सीमित नहीं रही। समाज के लिए कम कीमत पर गुणवत्ता चिकित्सा सेवा मुहैया कराना उनकी महान आकांक्षा थी। उनके इस दृष्टिकोण के फलस्वरूप, 1972 में चेन्नई के पहले मल्टी स्पेशियालिटी अस्पताल विजया अस्पताल की स्थापना की गई। 46 बिस्तरों से आरंभ किए गए इस अस्पताल को आगे चलकर विजया चिकित्सा और शैक्षिक न्यास के अन्तर्गत 700 बिस्तरों वाला अस्पताल बनाया गया। विजया ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स इस समय दक्षिण भारत का सबसे बड़ा स्वास्थ्य सेवा प्रदाता और विश्वसनीय चिकित्सा संस्थाओं में से एक है।

श्री बी. नागी रेड्डी ने 1986 में सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार, दादा साहब फाल्के पुरस्कार सहित अनेक पुरस्कार जीते हैं। आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 1987 में उन्हें 'रघुपति वेंकैया पुरस्कार' भी प्रदान किया गया। वर्ष 1973 में तमिलनाडु सरकार ने उन्हें 'कलैमामणी' पुरस्कार से नवाजा। 1978 में अखिल भारतीय मास्टर प्रिंटर्स फेडरेशन ने उन्हें 'जोहान्स् गुटेनबर्ग फेल्लो' से सम्मानित किया। अकादमी ऑफ जनरल एजुकेशन ऑफ मनिपाल का 'टी एम ए पाई' पुरस्कार भी उन्हें प्राप्त है। इसके अलावा, 1982 में श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय से और 1990 में श्री कृष्णदेवराय विश्वविद्यालय से उन्हें डी. लिट. (मानद) की उपाधि प्रदान की गई। 25 फरवरी, 2004 को उनका देहांत हो गया।

डाक विभाग श्री बी. नागी रेड्डी पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्न्ता का अनुभव करता है।

आभार :

मूलपाठ	: प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित
डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ विवरणिका/विरूपण	: श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक-टिकटें	:	6.61 लाख
Stamps Printed	:	6.61 lakh
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	भारतीय प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at

http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: ₹ 5.00